सत्तासन्तुलन

* प्रथम महायुद्ध तक सत्ता सन्तुलन ब्रिटेन की विदेश नीति का आधार स्तम्भ बना रहा।
* जब 1815 में यूरोप का संघ बना तो फ्रांस उसका सदस्य नहीं था।
* 1930-40 के दशक में सोवियत संघ ने फासीवादी शक्तियों के प्रति तुष्टीकरण की नीति की आलोचना की।
* लार्ड पामर्स्टन के अनुसार हमारे न स्थायी मित्र हैं, न स्थायी शत्रु, बल्कि स्थायी हित हैं।
* दूसरे महायुद्ध के बाद महाशक्तियों द्वारा स्थापित आतंक के सन्तुलन का अभिप्राय आधार परस्पर सुनिश्चित विनाश का भय था।

* केल्सरलीह के अनुसार – सत्ता सन्तुलन का अर्थ है राष्ट्रों के परिवारों के सदस्यों के बीच ऐसा न्यायसंगत सन्तुलन बनाए रखना जो उनमें से किसी को अधिक शक्तिशाली बनने से रोकेगा, ताकि वह अन्यों पर अपनी इच्छा न थोप सके।
* सत्ता सन्तुलन इस मान्यता पर आधारित है कि सत्ता, चाहे उसे रक्षा के साधन रूप में प्राप्त किया गया है, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए खतरा बन जाती है जब इसे रखने वाला राज्य अपने को सम्भावित शत्रु से अधिक शक्तिशाली होने का अनुभव करने लगता है।
* इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जा सकती कि व्यवहार में सत्ता सन्तुलन की नीति अत्यधिक भयानक खेल खेलने की तरह है जिसमें बड़े खतरे हैं और परिणाम निश्चित एवम् आकलनीय नहीं है।

Scanned By Scanner Go

* चूँकि अन्तर्राष्ट्रीय सन्तुलन की स्थिति का गहरा विश्लेषण यह दिखाता है कि इसमें वर्तमान विविध रूप में पुराने सिद्धान्त की प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती है। जिसे उदारता के सन्तुलन का नाम दिया गया।

* वर्तमान में स्वयं संयुक्त राष्ट्र संघ सत्ता की राजनीति का केन्द्र बन गया है। विश्व की बड़ी शक्तियाँ इसमें अपने पक्ष में सत्ता सन्तुलन को बनाए रखने या उसे परिवर्तित करने के लिए इस संगठन का प्रयोग करती है।

Pol-Sc (Hons)
Part-II
Paper- IV

Dr. Rama Kant Pandey
S.R.A.P. College
Bara Chakiya.